रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –36 ● अंक –19 ● कानपुर 1 से 15 अक्टूबर 2015 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹100

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया का महत्वपूर्ण निर्णय

दिल्ली में सरकार का अड़ियल रवैया नहीं चलेगा

"अब ज़्यादा हीला–हवाली नहीं बर्दाश्त करेंगे"

- उत्पीड़न रोकने को बनाई गयी रणनीति
- अब तो अधिकार लेकर ही रहेंगे
- अधिकारों पर अतिक्रमण स्वीकार नहीं
- मामला इधर–उधर करने की नीति का होगा विरोध
- 17 साल तक किया इन्तेज़ार
- अब करना ही होगा समाधान
- बरबस परेशान करने का प्रयास न करें

दिल्ली राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लड़ाई को पूरी तरह से लड़कर राज्य के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को अधिकार पूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करने हेतु प्रेरित किया जायेगा इस आशय का महत्वपूर्ण निर्णय 18 सितम्बर को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़इण्डिया (इहमाई) के दिल्ली स्थित कार्यालय निर्माण चौक मदनपुर खादर एक्सटेंशन में आयोजित दिल्ली राज्य के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की एक बैठक में लिया गया आपको अवगत करा दें कि दिल्ली राज्य प्रशासन द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की प्रैक्टिस में तरह–तरह के रोड़े लगाये जा रहे हैं और जाँच के नाम पर अनावश्यक रुप से प्रताड़ित किया जा रहा है जिससे कि दिल्ली राज्य का इलेक्ट्रो होम्योपैथ आक्रोशित है जैसे ही यह जानकारी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया (इहमाई) को उपलब्ध हुयी इहमाई ने तत्काल इस घटना को संज्ञान में लिया और आनन–फ़ानन बिना समय गंवाये दिल्ली के उपराज्यपाल को पत्र लिखकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की अधिकारिता से अवगत कराया गया और यह निवेदन किया गया कि माननीय उपराज्यपाल जी स्थिति की गम्भीरता को समझें और सम्बधित विभागों के अधिकारियों को वास्तविकता का अध्ययन कर उचित निर्देश देने की कृपा करें, हमारे निवेदन पर माननीय उप राज्यपाल जी ने प्रतिवेदन को निस्तारण करने हेतु आयुष विभाग को भेज दिया और आयुष ने इस प्रतिवेदन को होम्योपैथी विभाग को निस्तारण हेतु प्रेषित किया परन्तु होम्योपैथिक विभाग ने बड़ी ही चतुराई से जवाब देते हुये पत्र केन्द्र सरकार को प्रेषित कर दिया, यह पत्र स्पष्ट करता है कि होम्योपैथी विभाग किस तरह से सरकारों को भ्रमित कर रहा है। विभागों की इधर से उधर करने की नीति अब ज़्यादा दिन तक स्वीकार नहीं होगी इहमाई ने अब पूरी तरह से मन बना लिया है कि सरकार की लापरवाही व उपेक्षा को अब कतई स्वीकार नहीं किया जायेगा, जानबूझ कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मामले को लटकाने का कार्य इन चिकित्सा विभागों द्वारा किया जा रहा है जो अब बर्दाश्त से बाहर है बड़ी हँसी आती है जब जानकार अधिकारी अज्ञानी जैसा व्यवहार करते हैं उदाहरण स्वरुप जब कोई चिकित्सा विभाग का अधिकारी किसी इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक की जाँच करता है और उसे सबकुछ सही मिलता है तब वह कहता है कि हमें तो भारतीय चिकित्सा परिषद का पंजीकरण चाहिये यह सर्वविदित है कि जो चिकित्सक जिस चिकित्सा विधा से शिक्षित/ प्रशिक्षित होगा तो उसका पंजीयन भी उसी की ही परिषद में होगा। भारतीय चिकित्सा परिषद आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा पद्धति के स्नातकों का पंजीकरण करता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नहीं, यदि अधिकारी इतना भी नहीं जानता तो वह निश्चित तौर पर भ्रमित कर रहा होता है यह तो मात्र हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक को परेशान करने का हथकण्डा मात्र है बहुत दिनों तक इन हथकण्डों को हमने सहा है अब बहुत हो चुका है हर चीज़ की एक सीमा होती है और बर्दाश्त की भी एक सीमा होती है और जब कोई बात सीमा के बाहर होती है तो वहाँ सिर्फ़ विरोध होता है। 21 जून, 2011 का भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय द्वारा पारित आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान की राह प्रशस्त करता है व अधिकार प्रदान करता है। अब इसके बावजूद भी यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को अयोग्य माना जाता है तो यह उनके अधिकारों पर कुठाराघात है इस तरह के आघातों को सहते–सहते अब हम काफ़ी आहत हो चुके हैं इसलिये यह निर्णय ले लिया गया है कि रोज़–रोज़ की परेशानी से अच्छा है कि एक बार ऐसी लड़ाई लड़ली जाये जिससे हर समस्या का समाधान हो जाये हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास की बात करते हैं, बड़े–बड़े दावों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी का गुणगान करते हैं परन्तु हमें मिलता क्या है ?सिर्फ़ उपेक्षा व अपमान इसलिये अब यह हम सबका दायित्व है कि अपने अधिकारों को समझें और इस लड़ाई को गम्भीरता से लड़ें चूँकि यह हमारे जीवन मरण का प्रश्न है, अभी तक का जो दृश्य सामने आता है वह यही बताता है कि सरकारें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति ज़्यादा ईमानदारी से कार्य नहीं कर रही हैं उनके पास एक आज़माया हुआ हथकण्डा है कि एक विभाग से मामले को दूसरे विभाग में डाल देना और जब ज़्यादा दबाव पड़े तो मामले को केन्द्र सरकार पर डाल देना और केन्द्र सरकार राज्य सरकार की तरफ़ गेंद डाल देती है मामला फँसा का फँसा रहता है समाधान तो हो ही नहीं पाता। 21 जून, 2011 का स्पष्ट आदेश हर राज्य सरकारों सहित केन्द्र शासित प्रदेशों को भी लागू करना है लेकिन यह राज्य सरकारें कभी भी किसी भी मसले को गम्भीरता से नहीं लेतीं यह सरकारें इतनी ढीठ हैं कि इन्हें न्यायालय के आदेशों की भी परवाह नहीं होती। शायद हमारा दिल्ली राज्य का अधिकांश इलेक्ट्रो होम्योपैथ यह भूल गया होगा कि आज से 17 साल पहले 18 नवम्बर, 1998 को दिल्ली उच्चन्यायालय दिल्ली ने एक महत्वपूर्ण आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिए पारित किया था इस आदेश को दिल्ली राज्य सरकार को लागू करना था लेकिन 17 वर्ष बीत जाने के बाद भी अभी तक राज्य सरकार के कान में जूँ तक नहीं रेंगी। इन 17 वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत सारे उतार चढ़ाव आये परिस्थितियां बनी और बिगड़ीं लेकिन सरकार ने कुछ भी नहीं किया हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ लगातार इस आशा में बैठे हैं कि शायद वह दिन कभी आयेगा जब सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथों की भी सुनेगी बहुत इंतजार हो चुका है अब भी यदि हम हाथ पे हाथ धरे बैठे रहे तो कुछ भी नहीं होने वाला है अगर कुछ पाना है तो आगे बढ़कर आपको आना ही पड़ेगा और अपनी व्यवस्थाओं को मजबूत करना पड़ेगा। यदि हम यह सोचे बैठे रहेंगे कि सरकार कभी न कभी तो हमारा कल्याण करेगी ऐसे विचार कदाचित उत्साहवर्धक नहीं होते हैं वर्तमान परिस्थितियां आपके पक्ष में हैं अधिकार आपके पास है फिर भी आज अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं इससे ज्यादा निराशा की क्या बात हो सकती है बिना उत्साह के कार्य पूरी योग्यता को परिलक्षित नहीं करते और अपने उद्देश्यों को प्राप्ति भी नहीं कर सकते हैं। दिल्ली राज्य में जो भी संगठन कार्य कर रहे हैं और जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास की बात करते हैं यह उनका भी दायित्व है कि अपने अधिकारों को पूरे ढंग से प्राप्त करें, जब भी कोई संगठन यह बात करता है कि हम ही अधिकारी हैं तो सुनने में तो अच्छा लगता है लेकिन जब वास्तविकता सामने आती है तब जो भाव पैदा होते हैं वह कभी भी श्रद्धा का भाव नहीं होता है। दिल्ली राज्य में हजारों इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यावसाय कर अपनी रोज़ी–रोटी कमा रहा हैं लेकिन स्थानीय प्रशासन द्वारा अक्सर जाँच की आड़ में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को परेशान किया जाता है कभी–कभी समाचार पत्रों के माध्यम से ऐसे समाचार प्रकाशित कराये जाते हैं जो न केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी की छवि धूमिल करते हैं बल्कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों का मनोबल भी तोड़ने का काम करते हैं यह एक कटु सत्य है कि दिल्ली राज्य में लगभग हर

शेष अंतिम पेज पर

आन्दोलन को गति देनी ही होगी!

इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक आन्दोलन है और इस आन्दोलन को तबतक चलते रहना चाहिये जबतक की इलेक्ट्रो होम्योपैथी अपनी पूर्णतः को प्राप्त नहीं कर लेती पूर्णतः से तात्पर्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मान्यता से है और मान्यता प्राप्त करने के लिये हमें जिन–जिन कारकों की आवश्यकता होगी उसकी पूर्ति के लिये एक रचनात्मक आन्दोलन चलते रहने की आवश्यकता है आन्दोलनों के कई प्रकार होते हैं लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सिर्फ़ सकारात्मक एवं रचनात्मक आन्दोलन की महती आवश्यकता है कुछ व्यक्ति आन्दोलन शब्द को सुनते ही यह अर्थ निकालने लगते हैं कि शायद कहीं जाम लगाना होगा, धरना देना होगा, प्रदर्शन करना होगा, विधान सभा या लोक सभा के सामने नारे लगाना होगा या फिर उग्र प्रदर्शन करना होगा फिलहाल इलेक्ट्रो होम्योपैथी को इस प्रकार के आन्दोलनों की अभी कोई आवश्यकता नहीं है आवश्यकता है तो ऐसे रचनात्मक आन्दोलन की जो हमारे चिकित्सकों के मध्य ऊर्जा का भाव भरते हुये जागरुकता पैदा करना है आज पूरा देश जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ा है वह कहीं न कहीं इस आन्दोलन से जुड़ना तो चाहता है परन्तु वह भाव नहीं पैदा हो पा रहे हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत को आन्दोलित कर सके इसलिये वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन की बागडोर जिनके हाथों में है वे अपने आपको स्वयं ऊर्जित करें व आत्म विश्वास को जन्म दें क्योंकि जब स्वयं का आत्म विश्वास डगमगाया हुआ रहता है तो दूसरों के अन्दर आत्म विश्वास कैसे पैदा कर सकते हैं ?अस्तु इस सत्य को हमें समझना होगा कि नेतृत्व कर्ता के अन्दर उन प्रेरकत्व तत्वों का समावेश होना अति आवश्यक है जिससे कि दूसरा व्यक्ति प्रेरित हो सके आज जिस चीज़ की कमी सबसे अधिक दिखायी पड़ रही है तो वह है नेतृत्व कर्ताओं में आत्म विश्वास की, यही वह कमी है जो आन्दोलन को गति नहीं प्रदान करने देती आन्दोलन जब गतिहीन होता है तो एक अजीब सी शान्ति दृष्टिगोचर होती है और यदि यह शान्ति ज्यादा लम्बी खिंच जाती है तो उदासीनता स्वतः जन्म ले लेती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज जिस स्थिति में है वहां पर उदासीनता के लिये कोई स्थान नहीं है चूँकि एक लम्बी लड़ाई के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी उस स्थान पर पहुँच चुकी है जहाँ से सिर्फ़ प्राप्ति ही होनी है खोने के अवसर न के बराबर हैं इसलिये इस खोने व पाने के खेल को भूलकर सिर्फ़ गति प्रदान करने पर चिन्तन होना चाहिये गति से तात्पर्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये किये जाने वाले वह कार्य हैं जिनको करने के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी और उससे जुड़े व्यक्ति न केवल सम्मान पा सकते हैं बल्कि वह सबकुछ प्राप्त कर सकते हैं जिससे कि व्यक्ति की अपेक्षायें पूरी होती हैं हर व्यक्ति यह चाहता है कि वह जिस व्यवसाय से जुड़ा है वह व्यवसाय सम्मानित और जीवकोपार्जन से जुड़ा हो यद्यपि इलेक्ट्रो होम्योपैथी इन दोनों स्थितियों को पूरा करती है लेकिन फिर भी अभी बहुत कुछ करना है और इसे करने के लिये आन्दोलन के चलते रहने की बहुत आवश्यकता है आज जिस सुप्त गति से आन्दोलन चल रहा है उसमें गति देने की आवश्यकता है, गति कैसे प्राप्त हो ?यह कोई बहुत अधिक चिन्तन का विषय नहीं है क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को खड़ा करने के लिये जिन चीज़ों की आवश्यकता है वह हमें उपलब्ध है। किसी पद्धति को सुचारु रुप से चलते रहने के लिये यह आवश्यक है कि उसके पास संचालित होते रहने के लिये जिन वैधानिक अधिकारों की आवश्यकता होती है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास हैं राष्ट्रीय स्तर पर सुचारु रुप से संचालित होने के लिये भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 21 जून, 2011 को और उत्तर प्रदेश में संचालित करने के लिये प्रदेश सरकार द्वारा जारी 04 जनवरी, 2012 का शासनादेश हमारे पास है यह दोनों आदेश क्रमशः इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया व बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडसिन, उ0प्र0 के पक्ष में जारी किये जा चुके हैं और समझने की बात यह है कि यह दोनों आदेश इतने महत्वपूर्ण हैं कि समझदार व्यक्ति इन दोनो आदेशों के माध्यम से अपना परचम देश व प्रदेश जहाँ भी वह कार्य करना चाहे लहरा सकता है इसलिये इस प्रकार के आन्दोलनों को अबाध गति से चलते रहना चाहिये यहाँ सिर्फ़ उत्साह के लिये स्थान है, अन्त में हम तो यही कहेंगे कि ''जहाँ चाह वहाँ राह।''

सारे अधिकार आपके पास हैं

कार्य करने के लिए अधिकारों की आवश्यकता होती है जब अधिकार होते हैं तो कार्य भी मनोयोग से किये जाते हैं और जब कार्य मनोयोग से होते हैं तो परिणाम भी वांछित प्राप्त होते हैं और ज़बरदस्ती किये हुये कार्य कभी भी अच्छे परिणाम नहीं देते हैं पिछले कई महीनों से गज़ट के माध्यम से, जागरूकता अभियान के माध्यम से, सीधे सम्पर्क के माध्यम से, यह बार–बार कहा जा रहा है कि कार्य करें ! कार्य करें !! और कार्य कैसे करें ?इसके बारे में भी आपको प्रेरित किया जाता है लेकिन अभी भी कार्य करने की जो गति है उसमें अपेक्षित सुधार नहीं हो रहा है यह कोई शुभ संकेत नहीं है ।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत से जुड़े सारे व्यक्ति कार्य करना चाहते हैं पर कार्य नहीं कर रहे हैं, यह भी सच है ! कार्य नहीं कर पा रहे हैं !! जो लोग ऐसा तर्क देते हैं वे हमें अर्ध सत्य का दर्शन कराते हैं सत्य तो यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने के अधिकार हैं लेकिन हमें ज़रूरत है अपने अधिकारों को समझने की और इन अधिकारों का प्रयोग कैसे किया जाये ?इस पर भी विचार करना होता है जो व्यक्ति अधिकार प्राप्त होता है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होता है तो वह आत्म विश्वास से परिपूर्ण होकर कार्य करता है और अच्छे परिणाम भी प्राप्त करता है। इस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य करने के क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा है, वह है अपने अधिकारों के प्रति समझ और जो लोग अधिकारों के प्रति जागरूक हैं वह कर्तव्यों से मुहँ मोड़ लेते हैं परिणाम स्वरूप अधिकारों का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता है और जब अधिकारों का पूरी तौर पर उपयोग नहीं किया जायेगा तो आपको वह कैसे प्राप्त हो जायेगा जिसकी आपको आवश्यकता है ?अधिकार शब्द का प्रयोग आसानी से हर व्यक्ति कर लेता है लेकिन अधिकारों के साथ एक शब्द और है वह है कर्तव्य जब तक हम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते हैं तब तक अधिकारों का प्रयोग भरपूर ढंग से नहीं कर सकते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अधिकार पूर्वक कार्य करने के लिए कुछ कर्तव्यों का पालन करना बहुत आवश्यक होता है और यह हमें ही करना होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अधिकार पूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए कुछ कर्तव्य हैं जिनपर बिन्दुवार पूर्ति होनी चाहिये। जैसे अधिकार पूर्वक प्रैक्टिस करने के लिए किसी भी चिकित्सक के पास आवश्यक अर्हता होना आवश्यक है यानि चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए किसी वैधानिक संस्था द्वारा न्यूनतम दो वर्षीय पाठ्यक्रम का पूरा होना आवश्यक है उसके बाद आप जिस राज्य में प्रैक्टिस करना चाहते हैं उस राज्य में विधि सम्मत ढंग से स्थापित इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्था में पंजीयन होना चाहिये और इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों का ही प्रयोग करना चाहिये। तभी आप अधिकार प्राप्त चिकित्सक की भाँति कार्य कर पायेंगे। यदि उत्तर प्रदेश राज्य में प्रैक्टिस करनी है तो आप जिस जनपद में प्रैक्टिस कर रहे हैं उस जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में अपने चिकित्सा अभ्यास से सन्दर्भित कार्य करने हेतु पंजीयन के लिए आवेदन प्रस्तुत करना अति आवश्यक है तभी आप अधिकार पूर्वक कार्य कर सकते हैं यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो निश्चित तौर पर सारे अधिकार होते हुए भी आप कार्य करने के अधिकारी नहीं होते हैं।

इसलिए अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए अधिकारपूर्वक कार्य करने की चेष्टा करें तभी कार्य करने में आनन्द प्राप्त होगा अन्यथः कार्य करने में जो तन्यमयता होनी चाहिये उसका सर्वथा अभाव बना रहेगा इसलिए सारे अधिकार आपके पास हैं यदि इस बात पर गर्व हमें रखना है तो हमें अपने कर्तव्यों से मुहँ नहीं मोड़ना चाहिये इसे हम क्या कहें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पूर्ण अधिकार प्राप्त होने के बावजूद भी लोगों के मन में अपने अधिकारों के प्रति संशय का भाव है लोग परस्पर एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते हैं ऐसा क्यों है ? इसपर हमें स्वतः निर्णय लेना होगा यह तो आदिकाल से चला आ रहा है हर जगह दो वर्ग होते हैं एक अधिकार प्राप्त ! एक अधिकार विहीन !! जो अधिकार विहीन लोग होते हैं वह अधिकार प्राप्त लोगों को प्राप्त अधिकार के बारे में तरह–तरह के प्रश्न खड़े करते हैं जिससे कि अधिकार प्राप्त लोगों के मन में भी संशय का भाव जन्म लेने लगता है, लेकिन यह संशय का भाव उन्हीं के मन में होता है जो अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं होते हैं और अधिकार पाने वाली संस्था पर विश्वास नहीं करते यही विश्वास और अविश्वास की डोर हमें एक जगह टिकने नहीं देती है। फलस्वरूप हमारे भाव भी स्थिर नहीं रह पाते हैं जिस व्यक्ति के भाव स्थिर नहीं होंगे वह कभी भी अपने आप को स्थिरता प्रदान नहीं कर सकता और स्थिर मानसिकता वाला व्यक्ति ही सही रूप से अपनी जागरूकता का परिचय नहीं दे पाते हैं और इसी कारण अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर पाते, यदि हम गम्भीरता से चिन्तन करें तो एक बात एकदम साफ़ तौर पर नज़र आने लगती है कि हम अपने अधिकारों के प्रति इतने गम्भीर क्यों नहीं है इसके गर्भ में यह है कि आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नेतृत्व जिन हाथों में है उन्हें अपने पर ही भरोसा नहीं है कि कल क्या होने वाला है ?जब हमारे नेतृत्वकर्ता ही ऐसे होंगे तो संशय की स्थिति बनी ही रहेगी लेकिन देर सबेर ही सही हमें इस स्थिति से उबरना होगा और अपने अधिकारों को समझना होगा। हम बात तो करते हैं वह सबकुछ पाने की जिसे पाने के लिये किये गये कार्यों के परिणामों का आना बहुत आवश्यक है परन्तु कतर्व्यों से कोसों दूर रहते हैं ऐसा नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ हो नहीं रहा है सभी लोग अपने–अपने कार्य में लगे हैं परन्तु दिशा अलग–अलग है और जब दिशायें अलग–अलग होती हैं तो समझ जाइये कि परिणाम क्या होंगे ?जब उद्देश्य एक है तो कार्य करने की दिशा भी एक ही होनी चाहिये बहुत सारे दिशाओं में भटकने वाले लोग दिशाहीन हो जाते हैं जिससे एक नया संकट खड़ा हो जाता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में आज अलग–अलग लोग अलग–अलग तरीके से कार्य कर रहे हैं कार्य तो अनवरत हो रहा है परन्तु परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं, कार्य करते–करते जब परिणाम नहीं मिलता है तो कभी–कभी जीवन में नीरसता सी आने लगती है जबकि सत्य तो यह है कि हमें अपने कार्यों पर भी चिन्तन करना चाहिये कि हम कैसे कार्य कर रहे हैं ?हम बबूल का पेड़ लगा कर आम की अपेक्षा करें यह कहाँ तक तर्क संगत है आज वास्विक आवश्यकता है कार्य करने की जबकि कुछ लोग मान्यता के लिये कार्य कर रहे हैं, कुछ लोग अधिकार दिलाने का कार्य कर रहे हैं, कुछ लोग सम्मेलन करने का कार्य कर रहे हैं, कुछ लोग सतत चिकित्सा शिक्षा के कार्य में लगे हैं, कुछ लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी की एडवांस ट्रेनिंग दे रहे हैं और कुछ लोग जो जागरुकता अभियान चला रहे हैं। कहने को तो यह सभी लोग अपने–अपने कार्यों को

शेष अंतिम पेज पर

हो हिमालय से ऊँचा तेरा हौसला

पिछले अंक में हमने लिखा कि रात भर मन तरह–तरह के विचारों में व्यस्त रहा तमाम अच्छे विचारों के साथ जब सुबह की पौ फटी तो मन नें यह संतोष किया कि कोई लौटा दे मेरे गुज़रे हुए दिन ! ज्यो ज्यों दिन चढ़ता गया और सूरज अपनी रोशनी बढ़ाता गया मन में भी आशा की नई रोशनी जागने लगी मन ने कहा कि गुज़रे हुए दिन कितने भी अच्छे क्यों न हो लेकिन जीना तो आज में पड़ता है और आज जो स्थितियां हैं उनका सामना करते हुए हमें आगे बढ़ना पड़ता है कहने को तो दिन बहुत अच्छे हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वह सबकुछ मिल गया है जिसके लिए हम वर्षो से इन्तज़ार कर रहे थे दूसरे शब्दों में गुज़रे तीस सालों में हम लोगों की कटी जली बातों को सुन–सुन कर काफ़ी मज़बूत हो चुके थे जिधर भी जाते थे हर आदमी अनावश्यक ताने मारता था शासन हो या सरकार, व्यक्ति हो या समाज किसी की भी दृष्टि में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सम्मान नहीं था जो लोग अन्जान थे सम्मान देते थे जब कभी समाचार पत्रों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में कोई समाचार छप जाता था तो लोग पूछते थे कि अखबारों में क्या छपा है ?हम थोड़ी देर के लिए झुंझलाते थे पता नहीं कौन से अदृश्य शक्ति हमारे मन को उत्साह प्रदान करती थी और सामने वाले को हम जो उत्तर देते थे उत्तर पाने के बाद सामने वाला यह कहता था कि सरकार आप लोगों के साथ अन्याय कर रही है। अन्याय का सिलसिला वर्षो से चलता चला आ रहा है अभी भी खत्म नहीं हुआ कभी–कभी तो लगने लगता है कि क्या यह एक अन्तहीन सिलसिला है तभी मन का दूसरा पक्ष मन को समझाने लगता है कि संघर्ष करो सफ़लता अवश्य मिलेगी इसी आशा में हम फिर अपने काम में लग जाते हैं पर विचलित मन को संतोष नहीं मिलता है और असंतोष चैन से बैठने नहीं देता है। तरह–तरह के अच्छे और बुरे विचारों से मन हर समय घूमता रहता है समय कभी स्थिर नहीं रहता सत्य को हम भी स्वीकारते हैं बचपन में जब हम गाँव में रहते थे तब बुजुर्गो के मुहँ से सुना था कि घूरे (कूड़ा डालने का स्थान) के दिन भी बहुरते हैं और हमारी आँखों ने यह देखा भी है कि कल तक जहाँ कोई बैठना पसन्द नहीं करता था आज वहां बहुखण्डीय इमारतें बनी है और इन इमारतों में रहने वाले लोग इस इलाके को पॉश इलाका बताते हैं। वक़्त कब कहाँ, क्या बदल जाये शायद यह कोई नहीं जानता लेकिन अपने आप हो जाये यह भी सम्भव नहीं है, कुछ पाने के लिये कुछ खोना पड़ता है साथ–साथ यत्न भी करने पड़ते हैं बिना प्रयासों के कोई उपलब्धि नहीं होती, इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हुये सभी लोग पाना तो बहुत कुछ चाहते हैं पर जब करने की बारी आती है तब करने वालों की संख्या बहुत कम होती है, व्यंग करने वाले तो यहाँ तक कहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी पूरब हो या पश्चिम–उत्तर हो या दक्षिण हर तरफ़ वनमैन शो है यह तो अच्छी बात है कि एक व्यक्ति के प्रयासों से यदि सामूहिक लाभ हो रहा है तो बुराई क्या है ?हम सब जानते हैं कि ''चमत्कार को नमस्कार है'' चमत्कार रोज़ नहीं हुआ करते, हर समाज, हर राष्ट्र का विकास किसी एक के ही नेतृत्व में होता है, हाँ ! यह ज़रुर है कि उस नेतृत्वकर्ता के साथ हज़ारों व्यक्ति होते हैं और इन्हीं हज़ारों व्यक्तियों का सामूहिक प्रयास सफ़लता का मार्ग प्रश्स्त करता है इस सफ़लता कों पाने के लिये तरह–तरह की धाराओं से गुज़रना पड़ता है कभी कहीं सपाट, समतल मैदान, कहीं हिमालय सी ऊँची चट्टाने और कभी–कभी तो उस कंटकाक्रीण मार्गो से होकर गुज़रना पड़ता है तब कहीं जा कर सफ़लता के आंशिक दर्शन हो पाते हैं, मन इन्हीं सब बातों में उलझा हुआ था और यह सोच रहा था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की राह इतनी आसान क्यों नहीं है ?क्या संघर्ष ही इसके जीवन में लिखा है ?कभी–कभी संघर्ष करते हुये जब व्यक्ति उपेक्षा का पात्र होता है तो मन में निराशा होना स्वाभाविक है लेकिन दूसरे ही पल मन कहता है कि जीवन में निराशा के लिये कोई स्थान नहीं है, निराश व्यक्ति कुछ भी पा नहीं सकता इस तरह के दार्शनिक विचार मन में कौंध रहे थे तभी वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शपथग्रहण समारोह का वह दृश्य सामने आ गया किसी चैनल में शपथग्रहण समारोह का सजीव प्रसारण हो रहा था और नेपथ्य में यह गीत गूँज रहा था जिस पथ पे चला, उस पथ में मुझे, तूँ साथ तो आने दे ! साथी न समझ, कोई बात नहीं, पर साथ निभाने दे !! मन ने एक गहरी सांस ली और विचार करने लगे कि ऐसे भाव हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथों में क्यो नहीं है ?हम यह क्यों नहीं स्वीकार करते कि यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के लिये कोई अच्छा आदेश होगा तो उसका सुख सभी लोग उठायेंगे अपने पराये की भावनायें क्यों है ?इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोई सत्ता नहीं है जो भोगी जाये हमारी दृष्टि में आज भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी वह आन्दोलन है जिसका लाभ सब लोगों को मिलेगा आज जो लोग मान्यता व अधिकारों को पाने की लड़ाई लड़ रहे हैं कल उनका प्रयास रंग लायेगा और मान्यता के साथ–साथ सारे अधिकार भी मिल जायेंगे तब यह सत्ता सुःख कहाँ रहे गा ?तभी मन ने फिर पलटी मारी और स्वार्थी भाव फिर से दिमांग में तैरने लगे अच्छे विचारों की जगह सिर्फ़ अपने के लिये भाव पैदा होने लगे परन्तु एक समर्पित इलेक्ट्रो होम्योपैथ होने के कारण मैने अपने मस्तिष्क में इस तरह के कुत्सित विचारों को ज़्यादा देर तक टिकने नहीं दिया, चूँकि मुझे याद है बचपन में मुझे सिखाया गया था कि गलत विचार गलत परम्पराओं को जन्म देते हैं, कुछ पल के लिये आते–जाते विचारों को हमने विराम दिया और एक सुखःद कल्पना में खो गये जो दृश्य सामने आ रहा था वह था सन् 1990 का दृश्य भारत की राजधानी दिल्ली के प्रगतिमैदान में हेल्थ एण्ड मेडिकेयर प्रदर्शनी का आयोजन था, आयोजन किया था ट्रेड फ़ेयर अथॉरिटी ऑफ़ इण्डिया ने, भारत सरकार के इस संगठन ने सारे विश्व के स्वास्थ्य से जुड़े हर विषय से सम्बन्धित जानकारियों को जनता तक पहुँचाने के लिये बहुत शानदार इन्तेज़ाम किया था। उस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी सारे भारत में शिखर पर थी तत्कालीन आंकड़े इस बात के गवाह हैं कि तत्समय चिकित्सा विधा में शिक्षा ग्रहण करने वाले सर्वाधिक शिक्षार्थी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हुआ करते थे, हर तरफ़ जोश था कोई इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपने आपको किसी भी विधा के चिकित्सक से कम नहीं समझता था आपस में समझदारी भी थी संस्थाओं में आपस में मतभेद तो थे परन्तु वे वैचारिक मतभेद थे परस्पर प्रतिद्वन्दिता का भाव नहीं था हर कार्यक्रम में सभी लोग बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते थे कहीं पर एक दूसरे को उठाने या गिराने की बात नहीं थी सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास देखना चाहते थे इसी सुखःद पलों का हिस्सा हम भी रहे हैं इस लेख को लिखने में जिस टीम का हमें सहयोग मिल रहा है यह टीम हेल्थ एण्ड मेडिकेयर में भी थी पर एक फ़र्क आया है वह है पुराने जोश का, मन यह सोचने लगता है, हो सकता है कि यह उम्र का प्रभाव हो या फ़िर पारिवरिक दायित्वों का बोझ लेकिन प्रसन्नता होती है मन में अभी भी कुछ कर गुज़रने की इच्छा है और इसी प्रबल इच्छा के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी विकास के पथ पर बढ़ रही है हेल्थ एण्ड मेडिकेयर के इस कार्यक्रम में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया ने भी एक स्टॉल लगा कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास की गाथा उदघृत करने का प्रयास किया था स्टॉल में एक बड़ा सा बैनर लगा था जिसमें एक मानचित्र था जो यह प्रदर्शित कर रहा था कि भारत के साथ–साथ विश्व में कहाँ–कहाँ इलेक्ट्रो होम्योपैथी संचालित हो रही है एक तरफ़ एक छोटा बैनर लगा था जिसमें लिखा था YES ! WE HAVE ANSWER TO CANCER यही वह वाक्य था जो पूरे प्रदर्शनी मण्डप को बरबस इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्टाल तक खींच लाता था साज–सज्जा के नाम पर हमारे पास कुछ नहीं था बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मंहगे–मंहगे स्टाल लगे थे बहुत सारे स्टाल तो इतने आकर्षक थे कि आंखें वह दृश्य देखने से हटने का नाम ही नहीं लेती थीं, प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में दर्शक प्रदर्शनी देखने आते थे मंहगे–मंहगे उपहार भी पाते थे, हमारे पास क्या था ?न कुछ देने को न कुछ दिखाने को, फिर भी सबसे ज़्यादा भीड़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्टाल पर ही रहती थी इसके दो कारण थे न0–1 लोगों के मन में यह कौतूहल कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी क्या है ?न0–2 यह जानने की जिज्ञासा कि कैन्सर जैसी बीमारी जिससे लड़ने की ताकत स्थापित चिकित्सा पद्धतियों के पास नहीं है यह कौन लोग हैं जो कैन्सर जैसी कष्टकारी व जानलेवा बीमारी का जवाब इनके पास है जब इस तरह के पोस्टर से प्रचार हुआ और दिल्ली के होम्योपैथिक चिकित्सकों के पास इसकी जानकारी पहुँची तो ऐसा लगा कि दिल्ली राज्य का सारा होम्योपैथ यह जानने को परेशान हो गया कि कौन हैं यह लोग ?नेहरु होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के छात्र व चिकित्सक, अध्यापकगण समूह में आकर यह प्रदर्शनी देखने लगे, केन्द्रीय होम्योपैथिक परिषद के सभी अधिकारी व चिकित्सक जिज्ञासा के साथ इस स्टाल में आये सबसे ज़्यादा जानकारी तो लोगों ने इस बात की प्राप्त की कि डा0 युद्धवीर सिंह जो दिल्ली राज्य के प्रथम स्वास्थ्य मंत्री होने के साथ–साथ नेहरु होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, दिल्ली के संस्थापक थे का इलेक्ट्रो होम्योपैथी से क्या सम्बन्ध है ?उनकी जिज्ञासा को शान्त करने के लिये हमारे स्टाल के जिम्मेदार साथियों ने जिस शालीनता से उत्तर दिया वह हमें आज भी भाव विभोर कर देता है। लगभग एक सप्ताह तक चलने वाले इस मेले में हज़ारों की संख्या में जानकार व गैर जानकार आये हमारा साहित्य लिया, हमारे बारे में जाना जब इस तरह के दृश्य आंखों के सामने तैरते हैं तो मन में गज़ब का उत्साह पैदा हो जाता है और अपनी उपेक्षा पर तरस आने लगता है इन्हीं सब उधेड़–बुन में मन पड़ा था तभी दुशयन्त कुमार की एक गज़ल ने हमारे मन को झकझोर कर रख दिया अब कोई पत्थर उछलना चाहिये, हर दिलों में आग जलनी चाहिये। आग जले भी तो क्यों न जले, जब कभी किसी को वह नहीं मिलता, जिसकी वह चाहत रखता है। मन परेशान हुआ तभी दूसरे गीत ने मन को शान्त किया '' कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता, कभी ज़मीं से आसमा नहीं मिलता'' इसी तरह की तरह–तरह की दुविधाओं से निपटते हुये मन को मनाना पड़ता है कि राह कितनी भी दुशकर क्यों न हो पर रुकना नहीं चाहिये, रुकजाना नहीं तूँ कहीं हार के – कांटो पे चलकर मिलेंगे साये बहार के ! पर यह तब होगा जब होगा हिमालय से ऊँचा तेरा हौसला।

नेताओं का जोश कहाँ लुप्त हो गया – वापस लाना होगा

प्रत्येक राष्ट्र व समाज अपनी उन्नति तभी कर पाते हैं जब उनके नेतृत्वकर्ता इमानदारी व पारदर्शिता से कार्य करते हैं और समाज को नेतृत्व देने वाले व्यक्ति में दूरदर्शिता व जोश कूट–कूट कर भरा हो तभी वह समाज का विकास कर सकता है इलेक्ट्रो होम्योपैथिक में भी ऐसे नेताओं की आवश्यकता है जो भविष्य को दृष्टि में रखते हुये नीति निर्धारित करें तथा उत्साह व जोश से लबरेज़ हो, ऐसा नहीं है कि हमारे यहाँ नेताओं की कमी है, हमारे नेता बड़े जोशीले हैं और बड़ा से बड़ा काम करने की ताकत भी रखते हैं लेकिन पता नहीं इस समय उन्हें क्या हो गया है ?कि नेताओं की सारी जमात एक अजीब सी चुप्पी साधे बैठी है यह बात समझ से परे है जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर कोई संकट नहीं था तब यह नेतागण मंचों पर आकर बड़े जोशीले व चुटीले भाषण दिया करते थे इनके भाषणों पर सभागार में बैठे हुये सभी व्यक्ति बरबस तालियां बजा ही देते थे, हमें आज भी याद आता है वह पल जब एक नेता जी अपने हर भाषणों में क्रांति की बात किया करते थे आज जब क्रांति की वास्तव में आवश्यकता है तब यह नेता जी अपनी ज़बान क्यों बन्द किये हैं ? जब अधिकार नहीं था तब अधिकारों की मांग होती थी और इन अधिकारों की पूर्ति के लिये धरने, प्रदर्शन व सम्मेलनों का आयोजन होता था और चिकित्सकों के बीच उत्साह भरने के लिये नेताओं के जबरदस्त ओजस्वपूर्ण भाषण होते थे उस समय का नज़ारा तो देखते ही बनता था चिकित्सकों में भी एक अजीब सा उत्साह था कभी–कभी तो ऐसा लगने लगता था कि हमारा हर चिकित्सक पैथी पर मर मिटने के लिये तैयार है इस तरीके का वातावरण हमारे वही जोशीले नेतागण तैयार करते थे जबकि आज वातावरण पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा है अधिकार भी प्राप्त हैं ज़रुरत है तो सिर्फ़ अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होने की, ऐसे में उन नेताओं का दायित्व ज़्यादा बढ़ जाता है जो अधिकार पाने के लिये लड़ रहे थे।

आज जब अधिकार मिल गया है तो उन अधिकारों का सही ढंग से उपयोग कराया जाये ताकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की चमक को पुनः ज़्यादा चमकीला बनाया जाये इसलिये इन नेताओं को अज्ञातवास व प्रवास से मोह तोड़ना होगा और अपने घर में रहकर उत्साह की वह लहर पैदा करनी होगी जिसके लिये वे जाने जाते हैं हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि घर ठीक तो सब ठीक, जहाँ जन्में जहाँ यश पाया वहीं के लिये जियो।

दिल्ली सरकार का अड़ियल ..... प्रथम पेज से आगे

राज्य के लोग रहते हैं इसलिए दिल्ली में लगभग हर राज्यों से शिक्षित इलेक्ट्रो होम्योपैथ चिकित्सा व्यवसाय कर रहा है, इसलिए हर चिकित्सक को अधिकार पूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करने का अवसर मिलना चाहिये यहां पर यह भेद नहीं होना चाहिये कि यह चिकित्सक बिहार का है बंगाल का है उड़ीसा का या पंजाब का सबको रोज़ी–रोटी कमाने का अधिकार है, सम्मान पाने का भी अधिकार है ऐसे में यह परम आवश्यक है कि दिल्ली राज्य सरकार कोई ऐसा कानून बनाये जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों की समस्या का स्थायी समाधान हो सके या तो केन्द्र सरकार द्वारा 21 जून, 2011 को पारित आदेश का अनुपालन करते हुए कोई शासनादेश पारित करे, या फिर जनहित याचिका में पारित 18 नवम्बर,1998 के दिल्ली हाईकोर्ट नई दिल्ली के आदेश का दिल्ली सरकार द्वारा पालन किया जाये और कोई ऐसी नीति दिल्ली सरकार द्वारा बनायी जाये जिससे कि दिल्ली का इलेक्ट्रो होम्योपैथ स्वाभिमान के साथ चिकित्सा व्यवसाय कर सके।

इन्ही सब समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए और स्थायी समाधान के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया ने आर–पार की लड़ाई का मन बना लिया है एक ऐसी नीति बनायी गयी है जिससे कि दिल्ली राज्य के चिकित्सक राहत महसूस कर सकें इसी नीति निर्धारण व लड़ाई के स्वरूप के लिए एक बैठक दिल्ली में आयोजित की गयी इस बैठक की अध्यक्षता इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 मो0 हाशिम इदरीसी बैठक का संयोजन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया के केन्द्रीय सचिव मो0 इदरीस खान व डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी के कुशल नेतृत्व में बैठक का आयोजन हुआ जिसमें प्रमख रूप से दिल्ली राज्य के चिकित्सक डा0 देवेन्द्र, डा0 जसवन्त सिंह, डा0 दिनेश चन्द्र गौतम, डा0 जय प्रकाश, मीडिया प्रभारी डा0 शिव कुमार पाल उपस्थित रहे।

हर चिकित्सक की प्रबल इच्छा थी कि इस लड़ाई को अब अन्तिम रूप दे दिया जाये, रोज़–रोज़ की झंझटों से अच्छा है कि लड़ाई ऐसे लड़ी जाये जिससे राज्य सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई ऐसी योजना बनाये जिससे कि राज्य के इलेक्ट्रो होम्योपैथों की समस्या का स्थायी समाधान हो सके और अधिकार पूर्वक प्रैक्टिस कर सकें, सम्मान के साथ कोई समझौता नहीं होना चाहिये।

यदि कोई हमारे सम्मान से खेलेगा तो हमसे भी किसी सम्मान की अपेक्षा न करें हम अन्तिम लड़ाई के लिए कटिबद्ध हैं हमारी चरणबद्ध योजना है कि हम कोई भीख नहीं माँग रहे हैं, न ही दया के पात्र हैं।हमें अपने प्राप्त अधिकारों को अधिकार पूवर्क प्रयोग करने की छूट मिलनी चाहिये और राज्य सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के लिये कोई कानून बनाना चाहिये, अब हम बहुत ज़्यादा प्रतीक्षा नहीं करेंगे 18 नवम्बर, 2015 से दिल्ली में अंतिम लड़ाई का कार्यक्रम शुरु हो जायेगा।

सारे अधिकार ..... दूसरे पेज से आगे

सफ़ल बताने नहीं थकते हैं लेकिन कितने सफ़ल हैं ?यह तो वह भी स्वयं जानते हैं अपनी पीठ तो सभी थपथपा लेते हैं परन्तु जब दूसरा आपकी पीठ थपथपाये तब जानिये कि आपने कुछ अच्छा किया है। अब हम बारी–बारी से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रहे कार्यों का स्वयं विशलेषण करें सबकुछ दपर्ण की तरह आपको साफ़–साफ़ नज़र आने लगे गा, जो लोग मान्यता की बात कर रहे हैं हमभी मान्यता की बात करते हैं लेकिन वर्तमान में मान्यता पाने का जो तरीका है वह कितना उचित है ?यदि धरनों, प्रदर्शनों, सम्मेलनों से मान्यता मिलती होती तो कोई भी पद्धति या थिरेपी गैरमान्यता प्राप्त नहीं होती, मान्यता पाने के लिये जो आवश्यक मापदण्ड हैं वह हमें हर हाल में पूरे करने ही होंगे तभी मान्यता की राह प्रशस्त होगी, जो लोग अधिकार दिलाने का कार्य कर रहे हैं वह लोग यह न भूलें कि देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा, शिक्षा व अनुसंधान का अधिकार हमें 21 जून, 2011 को ही प्राप्त हो चुका है। जो लोग सम्मेलन कर रहे हैं, अच्छा कार्य है, सम्मेलनों से तो जागरुकता बढ़ती है इसलिये सम्मेलनों का उद्देश्य पावन व पारदर्शी होना चाहिये उद्देश्य से भटके तो सम्मेलनों से क्या लाभ ?उलटा नुकसान यह होता है कि जो लोग कुछ पाने की चाहत में सम्मेलनों में जाते हैं वहां पर चाहा क्या ?मिला क्या ?की स्थिति से गुजरना पड़ता है अब तो लोगों का सम्मेलनों से भी मोह भंग हो जा रहा है। और एक बार मोह भंग हुआ तो दूबारा इतनी आसानी से नहीं जुड़ता । आज ज़रूरत है मोह पैदा करने की न कि मोहभंग करने की जो लोग सतत् चिकित्सा शिक्षा अभियान में लगे हैं कार्य बहुत अच्छा है चिकित्सा के क्षेत्र में तो इसकी बहुत आवश्यकता है लेकिन पहले कार्य तो हो जब अधिकारपूर्वक कार्य होगा और उसमें अनवरतता बनी रहेगी तो ऐसे अभियान अपनी सार्थकता सदैव बनाये रखेंगे। आज कुछ लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी को आगे बढ़ाने के लिये एडवाँस ट्रेनिंग प्रोग्राम चला रहे हैं कार्यक्रम काफ़ी अच्छा है जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि काफ़ी आगे की जानकारी देने की योजना इस कार्यक्रम के माध्यम से है लेकिन हमारा चिकित्सक अभी भी अपनी परम्परागत जानकारी में पारंगत नहीं है तो एडवाँस में वह कहाँ टिक पायेगा अच्छा होता कि उन्हें इतना साहसी बनाया जाता कि वे अपनी चिकित्सा पद्धति में ही चिकित्सा व्यवसाय कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास करते, कुछ लोगों द्वारा जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है वर्तमान परिपेक्ष्य में ऐसे ही अभियानों की आवश्यकता है यह अभियान किसी एक संस्था विशेष का अभियान नहीं है बल्कि सकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास को ध्यान में रखते हुये इस तरह के कार्यक्रम की कल्पना की गयी थी और यह अपेक्षा भी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में जुड़े हुये हर व्यक्ति की यह आवश्यकता है कि वह स्वयं जागरुक हो और दूसरों को भी जागरुक करे हम अपने आपको स्वयं महिमामंण्डित नहीं कर रहे हैं । चल रहे या फिर चलाये जा रहे सभी कार्यक्रम इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में ही हैं कोई कार्यक्रम कम या ज़्यादा नहीं है हर कार्यक्रम की अपनी अलग आवश्यकता है व उपयोगिता है लेकिन सारे कार्यक्रम सफ़ल होने के लिये यह आवश्यक है कि लोगों में जागरुकता का भाव पैदा हो, बिना जागरुकता के रुचि नहीं पैदा होती, अरुचि से किया गया कार्य कभी भी अच्छे परिणाम नहीं देते।